Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवम् वर्तमान प्रासंगिकता में विशेष भूमिका

[1]डॉ. साक्षी मेहता, [2]सुनीता खोरवाल

[1]सहायक आचार्य, मानविकी और कला विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

[2]शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विकास का मूल आधार है। यह केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं करती, बल्कि व्यक्ति को सामाजिक, नैतिक और व्यावसायिक रूप से सक्षम बनाती है। भारत में शिक्षा की भूमिका सदियों से समाज-निर्माण, संस्कृति-संरक्षण और राष्ट्र-निर्माण में केंद्रीय रही है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा और तकनीकी युग की चुनौतियों को देखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 2020 में एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) प्रस्तुत की, जिसका उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, सुलभ, लचीला, बहुविषयक और कौशल-आधारित बनाना है। यह नीति शिक्षा को केवल अकादमिक सफलता तक सीमित न रखकर उसे जीवनोपयोगी और रोजगारपरक बनाने का प्रयास करती है। इसमें 5+3+3+4 संरचना, मातृभाषा में शिक्षा, कौशल और उद्यमिता पर बल, डिजिटल शिक्षा और अनुसंधान-नवाचार को प्रोत्साहन जैसी विशेषताएँ शामिल हैं। वर्तमान समय में कई राज्यों में NEP का आंशिक/पूर्ण क्रियान्वयन प्रारंभ हो चुका है तथा SWAYAM और DIKSHA जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म शिक्षा के विस्तार में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। साथ ही, 2023 में स्थापित डिजिटल यूनिवर्सिटी जैसी पहलें भारत को नई दिशा प्रदान कर रही हैं। हालाँकि, डिजिटल डिवाइड, शिक्षक-प्रशिक्षण की कमी, मातृभाषा-आधारित शिक्षा की व्यवहारिक कठिनाइयाँ और वित्तीय संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ भी सामने हैं। वैश्विक स्तर पर NEP 2020 का संबंध संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDG-4) से है, जो सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण और समान शिक्षा सुनिश्चित करने पर बल देता है। भविष्य में यह नीति तकनीकी एवं AI आधारित शिक्षा, अनुसंधान संस्कृति, समान अवसर और रोजगारोन्मुखी शिक्षा के माध्यम से भारत को विश्व-शिक्षा के केंद्र में स्थापित कर सकती है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य NEP 2020 की विशेषताओं, वर्तमान उपलब्धियों, चुनौतियों और वैश्विक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करना है ताकि शिक्षा की वर्तमान प्रासंगिकता और भविष्य की दिशा पर स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जा सके।

कीवर्ड्स

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा का महत्व, कौशल आधारित शिक्षा, डिजिटल यूनिवर्सिटी, अनुसंधान एवं नवाचार, सतत विकास लक्ष्य, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, रोजगारोन्मुखी शिक्षा

1. भूमिका

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति और राष्ट्र के जीवन की धुरी है। यह केवल पठन-पाठन या परीक्षा तक सीमित नहीं होती, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व-विकास, सामाजिक समरसता, आर्थिक प्रगति और राष्ट्र-निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा को सामाजिक न्याय, समान अवसर और आत्मनिर्भरता का प्रमुख साधन माना गया है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को सदैव उच्च स्थान दिया गया है। प्राचीन गुरुकुल पद्धति से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली तक, शिक्षा ने समय-समय पर समाज और राष्ट्र को नई दिशा दी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अनेक शिक्षा नीतियाँ और आयोग गठित किए, जिनमें 1968 और 1986 की शिक्षा नीतियाँ उल्लेखनीय थीं। लेकिन 21वीं सदी की नई चुनौतियों और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण किया गया।

शिक्षा का समाज और राष्ट्र निर्माण में महत्व

1. **सामाजिक परिवर्तन का साधन** – शिक्षा से समाज में समानता, सहिष्णुता और जागरूकता का विकास होता है।
2. **आर्थिक प्रगति का आधार** – कौशल-आधारित शिक्षा रोजगार के अवसर बढ़ाती है और राष्ट्र की आर्थिक उन्नति सुनिश्चित करती है।
3. **नैतिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण** – शिक्षा मूल्य, संस्कृति और परंपराओं को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम है।
4. **लोकतांत्रिक सशक्तिकरण** – जागरूक और शिक्षित नागरिक लोकतंत्र को मजबूत करते हैं।
5. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा** – गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही किसी देश को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा में आगे रख सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का संक्षिप्त परिचय

वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं सदी की आवश्यकताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इसका लक्ष्य सभी वर्गों के लिए समावेशी, गुणवत्तापूर्ण, लचीली और बहुविषयक शिक्षा प्रणाली स्थापित करना है। यह नीति केवल शिक्षा सुधार का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में एक दूरदर्शी कदम है। इसमें विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, पाठ्यचर्या से लेकर मूल्यांकन तक और पारंपरिक शिक्षा से लेकर डिजिटल शिक्षा तक, सभी क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इसका मूल उद्देश्य भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति (Global Knowledge Superpower) के रूप में स्थापित करना है।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की तीसरी शिक्षा नीति है, जो स्वतंत्र भारत की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक युग के अनुरूप ढालने के लिए प्रस्तुत की गई। इसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(क) 5+3+3+4 संरचना

पुरानी 10+2 प्रणाली को हटाकर नई 5+3+3+4 शैक्षिक संरचना लागू की गई है। इसका उद्देश्य बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता और विकास की अवस्था के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना है।

1. **प्रारंभिक अवस्था (Foundation Stage) – 5 वर्ष**

- 3 वर्ष आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल + कक्षा 1 और 2
- बच्चों को खेल, गतिविधि, कहानी और अनुभव-आधारित शिक्षा प्रदान की जाएगी।
- इस स्तर पर गणितीय सोच, भाषा कौशल और रचनात्मकता विकसित करने पर जोर।

2. **प्रारंभिक प्राथमिक अवस्था (Preparatory Stage) – 3 वर्ष**

- कक्षा 3 से 5
- बच्चों को बुनियादी विज्ञान, गणित और भाषा की शिक्षा।
- कला, हस्तकला और खेलों को अनिवार्य बनाया गया।

3. **मध्य अवस्था (Middle Stage) – 3 वर्ष**

- कक्षा 6 से 8
- विषय-आधारित पढ़ाई, व्यावहारिक परियोजनाएँ, कौशल-आधारित गतिविधियाँ।
- कोडिंग, उद्यमिता और प्रायोगिक शिक्षा का समावेश।

4. **माध्यमिक अवस्था (Secondary Stage) – 4 वर्ष**

- कक्षा 9 से 12
- विषयों का चुनाव छात्रों की रुचि और क्षमता के अनुसार।
- व्यावसायिक शिक्षा, इंटर्नशिप और अनुसंधान परियोजनाओं को बढ़ावा।

(ख) मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में प्रारंभिक शिक्षा

NEP 2020 का एक महत्वपूर्ण प्रावधान है कि कक्षा 5 तक (और जहाँ संभव हो वहाँ कक्षा 8 तक) शिक्षा मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में दी जाए।

- इसका उद्देश्य है कि बच्चे अपनी मातृभाषा में बेहतर ढंग से सोच और समझ सकें।

- अनुसंधानों से यह सिद्ध हुआ है कि मातृभाषा में शिक्षा बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता और रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है।
- अंग्रेज़ी या अन्य भाषाएँ बाध्यकारी नहीं होंगी, बल्कि बहुभाषिकता पर बल दिया जाएगा।

(ग) कौशल आधारित शिक्षा एवं बहुविषयक अध्ययन

पूर्व में भारतीय शिक्षा प्रणाली को "रटंत प्रणाली" (rote learning) के लिए आलोचना झेलनी पड़ी। NEP 2020 में इस स्थिति को बदलने पर जोर दिया गया है।

- **कौशल-आधारित शिक्षा**

➢ कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप को शामिल किया गया।

➢ हस्तकला, कृषि, स्थानीय व्यवसाय, उद्यमिता, और डिजिटल कौशल पर बल।

- **बहुविषयक अध्ययन (Multidisciplinary Approach)**

➢ छात्रों को केवल एक धारा (विज्ञान, वाणिज्य, कला) तक सीमित न रखकर उन्हें अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता।

➢ उदाहरण: गणित पढ़ने वाला छात्र संगीत या कला भी चुन सकता है।

(घ) अनुसंधान और नवाचार पर बल

NEP 2020 उच्च शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन न बनाकर अनुसंधान और नवाचार का केंद्र बनाना चाहती है।

- राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान (National Research Foundation - NRF) की स्थापना की घोषणा।
- स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर शोध आधारित प्रोजेक्ट अनिवार्य।
- स्टार्टअप और उद्यमिता को शिक्षा प्रणाली से जोड़ने का प्रयास।
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी, AI, और डिजिटल शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी में भी अनुसंधान को बढ़ावा।

(ङ) डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा पर बल

कोविड-19 महामारी ने डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता को और स्पष्ट कर दिया। NEP 2020 ने इसे भविष्य का मूल आधार माना है।

- SWAYAM, DIKSHA, NPTEL जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का विस्तार।
- डिजिटल यूनिवर्सिटी 2023 की स्थापना।
- ई-लर्निंग संसाधनों को सभी भाषाओं में उपलब्ध कराने का प्रयास।
- हाइब्रिड लर्निंग (ऑफलाइन + ऑनलाइन) को बढ़ावा।

(च) मूल्यांकन प्रणाली में सुधार

- पुरानी परीक्षा प्रणाली को बदलकर सतत और समग्र मूल्यांकन (CCE) पर बल।
- छात्रों की रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमता का आकलन।
- बोर्ड परीक्षाओं को आसान बनाना, केवल "मुख्य दक्षताओं" पर आधारित प्रश्न।
- रिपोर्ट कार्ड में अकादमिक प्रदर्शन के साथ-साथ कौशल, खेल, कला और व्यक्तित्व विकास का भी मूल्यांकन।

(छ) समावेशी और समान शिक्षा

- सभी वर्गों (SC, ST, OBC, अल्पसंख्यक, विकलांग, पिछड़े क्षेत्र) को शिक्षा से जोड़ने का विशेष प्रावधान।
- जेंडर इन्क्लूज़न फंड और स्पेशल एजुकेशन ज़ोन्स की स्थापना।
- दिव्यांग छात्रों के लिए डिजिटल और शारीरिक सुविधाएँ।

(ज) उच्च शिक्षा सुधार

- एकल विनियामक संस्था (Higher Education Commission of India - HECI) की स्थापना।
- स्नातक पाठ्यक्रम 3 या 4 वर्ष का, बहिर्गमन विकल्पों के साथ (Certificate, Diploma, Degree)।
- मेडिकल और लीगल शिक्षा को छोड़कर सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए समान नियम।
- Autonomous Colleges और Research Universities की अवधारणा।

(झ) शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण

- 2030 तक शिक्षक बनने के लिए न्यूनतम योग्यता B.Ed. (4 वर्ष)।
- शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण और प्रोफेशनल डिवेलपमेंट कार्यक्रम।
- शिक्षण में ICT और डिजिटल साधनों का उपयोग।

(ञ) भारतीय संस्कृति और वैश्विक दृष्टिकोण

- भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, आयुर्वेद, शास्त्रीय भाषाएँ और कला को बढ़ावा।
- साथ ही, शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैंपस खोलने की अनुमति।

(ट) प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE)

- 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम।

- आंगनवाड़ी और प्राथमिक विद्यालयों के बीच समन्वय।
- NCERT द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री का विकास।

NEP 2020 शिक्षा प्रणाली को सर्वांगीण, बहुविषयक, कौशल-आधारित, डिजिटल, अनुसंधान-केंद्रित और समावेशी बनाने का प्रयास करती है। यह नीति शिक्षा को केवल नौकरी पाने का साधन नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी अनुभव और आत्मनिर्भरता का माध्यम मानती है।

3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य और उपलब्धियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) की घोषणा के बाद से भारत में शिक्षा क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण पहलें की गई हैं। हालाँकि यह नीति अभी प्रारंभिक चरण में है, फिर भी इसके कई प्रावधानों का आंशिक या पूर्ण क्रियान्वयन देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में प्रारंभ हो चुका है। इस खंड में वर्तमान परिप्रेक्ष्य और प्रमुख उपलब्धियों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण प्रस्तुत है।

(क) राज्यों में NEP का आंशिक/पूर्ण क्रियान्वयन

- कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों ने उच्च शिक्षा स्तर पर NEP के कई प्रावधान लागू कर दिए हैं।
- कुछ राज्यों ने विद्यालयी स्तर पर नई 5+3+3+4 संरचना के अनुसार पाठ्यचर्या और मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव प्रारंभ किया है।
- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में मल्टीपल एंट्री-एग्ज़िट सिस्टम अपनाया जा रहा है, जहाँ छात्र अपनी पढ़ाई बीच में छोड़कर प्रमाणपत्र/डिप्लोमा लेकर बाद में पुनः प्रवेश ले सकते हैं।

(ख) डिजिटल यूनिवर्सिटी 2023 की स्थापना

भारत सरकार ने डिजिटल यूनिवर्सिटी की स्थापना 2023 में की।

- इसका उद्देश्य है कि भारत के हर छात्र को, चाहे वह देश के किसी भी कोने में रहता हो, गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शिक्षा तक पहुँच मिले।
- यह विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों में ऑनलाइन डिग्री, सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम उपलब्ध करा रहा है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग, डेटा साइंस और ब्लॉकचेन जैसी नई पीढ़ी की तकनीकों को इसमें शामिल किया गया है।

(ग) SWAYAM, DIKSHA और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स

- **SWAYAM (Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds)**: उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के लिए भारत सरकार का प्रमुख ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, जिसमें हज़ारों मुफ़्त ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध हैं।

- **DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing)**: विशेष रूप से विद्यालयी शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के लिए बनाया गया प्लेटफॉर्म, जिसमें e-content, वीडियो, पाठ्यपुस्तक और इंटरैक्टिव सामग्री उपलब्ध है।
- **NPTEL (National Programme on Technology Enhanced Learning)**: IITs और IISc द्वारा तकनीकी और इंजीनियरिंग शिक्षा के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम।

(घ) राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF) का विकास

- NEP 2020 के तहत राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF) लागू करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है।
- इसका उद्देश्य शिक्षा को लचीला और सतत बनाना है।
- छात्र विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा तक क्रेडिट अर्जित कर सकते हैं, जिन्हें वे भविष्य में आगे की पढ़ाई में उपयोग कर सकेंगे।
- यह प्रणाली छात्रों को अपनी शिक्षा यात्रा को रुक-रुक कर (modular form) पूरी करने का अवसर देती है।

(ङ) उद्यमिता, स्टार्टअप और रिसर्च को बढ़ावा

NEP 2020 का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है शिक्षा को उद्यमिता और नवाचार से जोड़ना।

- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में इनोवेशन सेल्स और स्टार्टअप हब स्थापित किए गए हैं।
- अटल इनोवेशन मिशन और इन्क्यूबेशन सेंटर जैसी योजनाओं से छात्रों को नए स्टार्टअप स्थापित करने में सहायता मिल रही है।
- छात्र स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर रिसर्च प्रोजेक्ट्स कर रहे हैं, जिन्हें सरकार और निजी कंपनियों द्वारा फंडिंग मिल रही है।

(च) मातृभाषा में शिक्षा की पहल

- कई राज्यों ने कक्षा 1 से 5 तक मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रारंभ कर दी है।
- नई NCERT और SCERT पाठ्यपुस्तकों में स्थानीय भाषा और लोक-संस्कृति का समावेश किया जा रहा है।
- AICTE ने तकनीकी शिक्षा की पुस्तकों का अनुवाद 12 भारतीय भाषाओं में शुरू किया है।

(छ) शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

- DIKSHA और SWAYAM जैसे प्लेटफॉर्म्स पर शिक्षकों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल उपलब्ध कराए गए हैं।
- कई राज्यों ने अपने शिक्षकों को ICT आधारित शिक्षण तकनीक में प्रशिक्षित करने के लिए विशेष कार्यशालाएँ आयोजित की हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में 4 वर्षीय B.Ed. पाठ्यक्रम लागू करने की दिशा में कार्य हो रहा है।

(ज) अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विदेशी विश्वविद्यालय

- भारत ने कुछ विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ समझौते किए हैं ताकि उनके ऑनलाइन कोर्स और कैंपस भारत में उपलब्ध हो सकें।
- 2022-23 में ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन के कई विश्वविद्यालयों ने भारतीय संस्थानों के साथ डुअल डिग्री प्रोग्राम प्रारंभ किए।
- इससे भारतीय छात्रों को वैश्विक स्तर की शिक्षा अपने ही देश में उपलब्ध होने लगी है।

(झ) शिक्षा में तकनीकी नवाचार

- कई राज्यों ने विद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम, टैबलेट और डिजिटल बोर्ड की व्यवस्था की है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित एडेप्टिव लर्निंग प्लेटफॉर्म्स विकसित किए जा रहे हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए भारतनेट योजना पर कार्य जारी है।

NEP 2020 का क्रियान्वयन अभी प्रारंभिक अवस्था में है, लेकिन इसके परिणाम सकारात्मक दिखाई दे रहे हैं। डिजिटल यूनिवर्सिटी, SWAYAM और DIKSHA जैसे प्लेटफॉर्म्स, मातृभाषा में शिक्षा की पहल, उद्यमिता को प्रोत्साहन और शिक्षक प्रशिक्षण की योजनाएँ इस नीति की वर्तमान उपलब्धियों का स्पष्ट उदाहरण हैं। आने वाले समय में यदि इन पहलों को समन्वित और स्थायी रूप से लागू किया जाता है, तो यह भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

4. वर्तमान चुनौतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक, समावेशी और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। किंतु किसी भी नई नीति की तरह इसके क्रियान्वयन में अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। ये चुनौतियाँ केवल तकनीकी या प्रशासनिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भी हैं। इस खंड में प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

(क) डिजिटल डिवाइड (ग्रामीण-शहरी अंतर)

- भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल पहुँच में बड़ा अंतर है।
- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) 2021 की रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण भारत में केवल 24% घरों में इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह आँकड़ा लगभग 68% है।
- ऑनलाइन शिक्षा के लिए आवश्यक स्मार्टफोन, लैपटॉप और हाई-स्पीड इंटरनेट आज भी कई परिवारों की पहुँच से बाहर हैं।
- कोविड-19 महामारी के दौरान यह स्थिति स्पष्ट हुई कि लाखों छात्र ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रह गए।

(ख) शिक्षकों के प्रशिक्षण की कमी

- NEP 2020 शिक्षकों को "नीति की आत्मा" मानती है, लेकिन शिक्षक प्रशिक्षण एक बड़ी चुनौती है।
- देश में आज भी कई शिक्षक पारंपरिक शिक्षण शैली अपनाते हैं और ICT आधारित शिक्षण में दक्ष नहीं हैं।
- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (2022) की रिपोर्ट के अनुसार, केवल 40% शिक्षक ही ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म्स का प्रभावी उपयोग कर पा रहे हैं।
- 4 वर्षीय B.Ed. कार्यक्रम लागू करने में कई विश्वविद्यालयों और राज्यों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

(ग) मातृभाषा आधारित शिक्षा की व्यवहारिक कठिनाइयाँ

- NEP 2020 का प्रावधान है कि कक्षा 5 (और जहाँ संभव हो वहाँ कक्षा 8) तक शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में दी जाए।
- व्यवहार में यह कठिन है क्योंकि:

1. भारत जैसे बहुभाषी देश में एक ही कक्षा में कई भाषाएँ बोलने वाले छात्र हो सकते हैं।
2. उच्च शिक्षा और तकनीकी विषयों की अधिकतर सामग्री अंग्रेज़ी में उपलब्ध है।
3. कई अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चे प्रारंभ से ही अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ें ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पीछे न रहें।

(घ) वित्तीय और संरचनात्मक संसाधनों की कमी

- NEP 2020 का लक्ष्य है कि शिक्षा पर GDP का 6% खर्च किया जाए। लेकिन वर्तमान में यह आँकड़ा 3–3.5% के बीच है।
- ग्रामीण क्षेत्रों के कई विद्यालयों में आज भी शौचालय, पीने का पानी, बिजली और इंटरनेट जैसी बुनियादी सुविधाएँ नहीं हैं।
- डिजिटल क्लासरूम, स्मार्ट बोर्ड और लैब की स्थापना के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता है।

(ङ) सामाजिक और सांस्कृतिक असमानताएँ

- भारत में अब भी लड़कियों, दिव्यांग बच्चों, अनुसूचित जाति और जनजाति समुदायों की शिक्षा तक पहुँच सीमित है।
- जेंडर इन्क्लूजन फंड और स्पेशल एजुकेशन ज़ोन जैसी योजनाएँ घोषित तो हुई हैं, लेकिन इनका प्रभाव स्थानीय स्तर पर अभी स्पष्ट नहीं है।
- कई परिवारों में आज भी बालिकाओं की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती, जिससे ड्रॉपआउट दर अधिक है।

(च) मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव की चुनौतियाँ

- NEP 2020 ने परीक्षा प्रणाली को सरल और समग्र बनाने पर बल दिया है। लेकिन व्यवहार में अभी भी कई विद्यालयों में रटंत प्रणाली प्रचलित है।
- शिक्षक और अभिभावक दोनों ही पारंपरिक अंक-आधारित मूल्यांकन को अधिक विश्वसनीय मानते हैं।
- नए रिपोर्ट कार्ड (जिसमें खेल, कला, कौशल का भी आकलन होगा) को कई स्कूल पूरी तरह से लागू नहीं कर पाए हैं।

(छ) प्रशासनिक और नीतिगत बाधाएँ

- शिक्षा भारत में समवर्ती सूची (Concurrent List) का विषय है, यानी इसमें केंद्र और राज्य दोनों की भूमिका है।
- कई राज्यों ने अभी तक NEP 2020 को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया है।
- राज्यों की अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों के कारण नीति का एकसमान क्रियान्वयन कठिन है।

(ज) उच्च शिक्षा सुधार की चुनौतियाँ

- विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैंपस खोलने की अनुमति दी गई है, लेकिन इससे समानता और सुलभता पर प्रश्नचिह्न लग सकता है।
- निजी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की बढ़ती संख्या से शिक्षा का व्यावसायीकरण (Commercialization) होने का खतरा है।
- मल्टीपल एंट्री-एग्ज़िट सिस्टम छात्रों को लचीलापन देता है, परंतु यह उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रशासनिक ढाँचे के लिए एक बड़ी चुनौती है।

5. अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) केवल भारत की आंतरिक शैक्षिक ज़रूरतों को पूरा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्रतिस्पर्धी बनाने का भी प्रयास है। वर्तमान युग में शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच और नवाचार किसी भी राष्ट्र की वैश्विक पहचान और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता तय करते हैं। अतः NEP 2020 का मूल्यांकन अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में करना आवश्यक है।

(क) सतत विकास लक्ष्य (SDG-4) और NEP 2020

संयुक्त राष्ट्र के **सतत विकास लक्ष्य (SDGs)** में शिक्षा से संबंधित लक्ष्य **SDG-4** है, जो कहता है:

"सभी के लिए समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना।"

NEP 2020 की कई विशेषताएँ सीधे-सीधे SDG-4 से मेल खाती हैं:

1. **समान अवसर** – जेंडर इन्क्लूजन फंड और स्पेशल एजुकेशन ज़ोन के माध्यम से वंचित वर्गों को शिक्षा उपलब्ध कराना।
2. **गुणवत्ता** – कौशल-आधारित और शोध-उन्मुख शिक्षा पर बल देना।
3. **आजीवन सीखना** – मल्टीपल एंट्री-एग्ज़िट सिस्टम और क्रेडिट बैंक की सुविधा।
4. **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE)** – 5+3+3+4 संरचना का पहला चरण SDG-4.2 के अनुरूप है।

(ख) वैश्विक शिक्षा प्रणाली से तुलना

1. **अमेरिका** – वहाँ की शिक्षा प्रणाली में लिबरल आर्ट्स और मल्टीडिसिप्लिनरी शिक्षा का महत्त्व है। NEP 2020 ने भी इसी मॉडल से प्रेरणा लेकर स्नातक स्तर पर छात्रों को विभिन्न विषयों के चुनाव की स्वतंत्रता दी है।
2. **फिनलैंड** – दुनिया की सबसे सफल शिक्षा प्रणालियों में गिनी जाती है, जो छात्र-केंद्रित शिक्षण, कम परीक्षा दबाव और नवाचार-आधारित शिक्षण पर आधारित है। NEP 2020 भी छात्रों पर परीक्षा का बोझ घटाने और समग्र मूल्यांकन अपनाने पर बल देता है।
3. **चीन** – वहाँ शिक्षा में प्रौद्योगिकी और अनुसंधान पर बड़ा निवेश किया जाता है। NEP 2020 में भी डिजिटल यूनिवर्सिटी, AI आधारित शिक्षा और नवाचार संस्कृति के विकास पर बल दिया गया है।
4. **जापान और कोरिया** – इन देशों ने तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा (TVET) पर ध्यान देकर अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया। NEP 2020 ने भी कौशल आधारित शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण को मुख्य धारा में लाने का संकल्प लिया है।

(ग) अंतरराष्ट्रीय सहयोग और भारत की भूमिका

- **विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैंपस खोलने की अनुमति** दी गई है, जिससे भारतीय छात्रों को वैश्विक स्तर की शिक्षा अपने देश में ही उपलब्ध होगी।
- **शोध सहयोग (Research Collaboration)** के लिए नीति अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देती है।
- **विद्यार्थियों और शिक्षकों का अंतरराष्ट्रीय आदान-प्रदान** (Student & Faculty Exchange) भी उच्च शिक्षा में प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- भारत ने **UNESCO, UNICEF और विश्व बैंक** के साथ मिलकर कई शिक्षा परियोजनाओं में भाग लिया है।

(घ) वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय शिक्षा प्रणाली की स्थिति

- QS World University Rankings 2025 के अनुसार भारत के केवल कुछ ही संस्थान (IIT बॉम्बे, IISc बेंगलुरु) शीर्ष 200 में स्थान बना पाए।
- अमेरिका, ब्रिटेन और चीन की तुलना में भारत की उच्च शिक्षा अभी भी अनुसंधान उत्पादन, फंडिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर में पीछे है।

- NEP 2020 का लक्ष्य है कि भारतीय विश्वविद्यालय विश्वस्तरीय संस्थानों की श्रेणी में आएँ। इसके लिए रिसर्च एंड इनोवेशन फंड (RIF) और नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF) की स्थापना की जा रही है।

(ङ) प्रवासी भारतीय और अंतरराष्ट्रीय छात्र

- NEP 2020 का उद्देश्य है कि भारत **वैश्विक शिक्षा केंद्र (Global Study Destination)** बने।
- इसके तहत विदेशी छात्रों के लिए विशेष सुविधाएँ, बहुभाषी पाठ्यक्रम और स्कॉलरशिप योजनाएँ विकसित की जा रही हैं।
- साथ ही, भारतीय प्रवासी समुदाय (NRI/PIO) को भारतीय शिक्षा से जोड़ने के लिए **ऑनलाइन और हाइब्रिड कार्यक्रमों** को बढ़ावा दिया जा रहा है।

(च) चुनौतियाँ और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

हालाँकि, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में भारत को कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है:

1. **शोध पर कम निवेश** – भारत GDP का लगभग 0.7% शोध पर खर्च करता है, जबकि अमेरिका 2.8% और चीन 2.2% खर्च करता है।
2. **मस्तिष्क पलायन (Brain Drain)** – बेहतर अवसरों की तलाश में प्रतिभाशाली छात्र और शोधकर्ता विदेश चले जाते हैं।
3. **भाषा अवरोध** – वैश्विक स्तर पर अंग्रेज़ी प्रमुख शैक्षिक भाषा है, जबकि NEP मातृभाषा पर बल देता है।
4. **गुणवत्ता आश्वासन (Quality Assurance)** – सभी भारतीय संस्थानों में एक समान मानक सुनिश्चित करना कठिन है।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो NEP 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। यह नीति SDG-4 की दिशा में योगदान देती है, विश्वस्तरीय संस्थानों से प्रेरणा लेती है और भारत को अंतरराष्ट्रीय सहयोग का सक्रिय भागीदार बनाती है। हालाँकि, वास्तविक सफलता तभी संभव है जब शोध, नवाचार, संसाधन और गुणवत्ता सुधार पर विशेष ध्यान दिया जाए। तभी भारत शिक्षा के क्षेत्र में एक वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर सकेगा।

6. भविष्य की दिशा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) केवल वर्तमान चुनौतियों का समाधान नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए शिक्षा की **नई रूपरेखा** प्रस्तुत करती है। यह नीति शिक्षा को 21वीं सदी की आवश्यकताओं – तकनीकी प्रगति, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, रोजगार के बदलते स्वरूप और सामाजिक समावेशन – के अनुरूप बनाने का प्रयास है। आने वाले वर्षों में भारत की शिक्षा प्रणाली को किन दिशाओं में आगे बढ़ना चाहिए, इसका विश्लेषण इस खंड में प्रस्तुत है।

(क) तकनीकी व AI आधारित शिक्षा का विस्तार

- डिजिटल क्रांति ने शिक्षा को पारंपरिक कक्षा से ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स तक विस्तारित कर दिया है।
- NEP 2020 का लक्ष्य है कि शिक्षा प्रणाली में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग, डेटा एनालिटिक्स, वर्चुअल रियलिटी और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों को शामिल किया जाए।
- डिजिटल यूनिवर्सिटी (2023) और प्लेटफॉर्म जैसे SWAYAM, DIKSHA, e-Pathshala शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं।
- भविष्य में शिक्षा हाइब्रिड मॉडल (ऑनलाइन + ऑफलाइन) के रूप में विकसित होगी, जिससे छात्रों को अधिक लचीलापन मिलेगा।

(ख) अनुसंधान एवं नवाचार संस्कृति को और प्रोत्साहन

- भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में अब तक शोध और नवाचार पर अपेक्षाकृत कम ध्यान रहा है।
- NEP 2020 ने इसके लिए नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF) की स्थापना का प्रस्ताव दिया है, जो शोध परियोजनाओं को फंड और मार्गदर्शन देगा।
- स्टार्टअप संस्कृति और इनोवेशन हब्स को बढ़ावा देकर छात्रों को रोजगार देने वाले नहीं, बल्कि रोजगार सृजन करने वाले (Job Creators) बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।
- वैश्विक स्तर पर चीन और अमेरिका की तरह भारत को भी शोध पर GDP का कम से कम 2% निवेश करना होगा।

(ग) समान अवसर सुनिश्चित करना

- शिक्षा का मूल उद्देश्य तभी सार्थक होगा जब समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलें।
- NEP 2020 ने इसके लिए जेंडर इन्क्लूजन फंड, स्पेशल एजुकेशन ज़ोन और वंचित समुदायों के लिए विशेष योजनाएँ प्रस्तावित की हैं।
- भविष्य में इन योजनाओं को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है ताकि लड़कियों, दिव्यांग छात्रों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों तक शिक्षा की पहुँच बढ़ाई जा सके।
- डिजिटल डिवाइड कम करने के लिए कम-लागत वाले उपकरण, ग्रामीण क्षेत्रों में हाई-स्पीड इंटरनेट और स्थानीय भाषा आधारित डिजिटल सामग्री उपलब्ध कराना होगा।

(घ) रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर बल

- आज के समय में केवल डिग्री आधारित शिक्षा पर्याप्त नहीं है।
- NEP 2020 का उद्देश्य है कि शिक्षा सीधे रोजगार और उद्यमिता से जुड़ी हो।

- व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य धारा में लाने के लिए विद्यालय स्तर से ही इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप और प्रैक्टिकल ट्रेनिंग को बढ़ावा दिया जाएगा।
- कौशल विकास मिशन (Skill India Mission), स्टार्टअप इंडिया और NEP 2020 का समन्वय भारत को वैश्विक रोजगार बाज़ार में मज़बूत स्थिति दिला सकता है।
- अंतरराष्ट्रीय कंपनियों की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रमों का निर्माण करना होगा, ताकि भारतीय छात्र केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर भी रोजगार पा सकें।

(ङ) वैश्विक सहयोग और गुणवत्ता सुधार

- भारत को शिक्षा में वैश्विक सहयोग बढ़ाना होगा।
- विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ ट्विनिंग प्रोग्राम्स, डुअल डिग्री कोर्सेज़ और शोध सहयोग को और विस्तार देना होगा।
- उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप लाने के लिए नेशनल एक्रेडिटेशन एजेंसियाँ अधिक सशक्त बनानी होंगी।
- भविष्य की दिशा में भारत को ग्लोबल स्टडी डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता है, ताकि विदेशी छात्र भारत में अध्ययन के लिए आकर्षित हों।

(च) सामाजिक और नैतिक शिक्षा का सुदृढ़ीकरण

- तकनीकी और व्यावसायिक प्रगति के साथ-साथ शिक्षा में मानव मूल्य, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को भी बनाए रखना होगा।
- NEP 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण चेतना और सांस्कृतिक धरोहर के अध्ययन पर बल दिया है।
- भविष्य की दिशा में "21वीं सदी का नागरिक" तैयार करना होगा, जो केवल कुशल प्रोफेशनल ही नहीं, बल्कि जिम्मेदार और नैतिक नागरिक भी हो।

भविष्य की दिशा स्पष्ट करती है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल एक शैक्षिक सुधार नहीं, बल्कि भारत की भविष्यदृष्टि है। तकनीकी विस्तार, शोध एवं नवाचार, समान अवसर, रोजगारोन्मुखी शिक्षा और वैश्विक सहयोग जैसे तत्व भारत को एक ज्ञान महाशक्ति (Knowledge Superpower) बनाने की क्षमता रखते हैं। हालाँकि, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त संसाधन, राजनीतिक इच्छाशक्ति और समाज की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है। यदि यह संभव हुआ, तो NEP 2020 भारत को 21वीं सदी की वैश्विक शिक्षा व्यवस्था में अग्रणी राष्ट्र बना सकती है।

7. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक दूरगामी और व्यापक सुधार है, जिसने शिक्षा को समान, समावेशी, कौशल-आधारित, बहुविषयक और भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा तय की है। इसका उद्देश्य केवल शिक्षा संरचना (5+3+3+4) का पुनर्गठन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण और आर्थिक प्रगति में शिक्षा को केंद्रीय भूमिका देना है। इसमें समानता व समावेशन, गुणवत्ता व लचीलापन, डिजिटल सशक्तिकरण, शोध व नवाचार तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर विशेष बल दिया गया है। हालाँकि, इसके क्रियान्वयन में डिजिटल डिवाइड, शिक्षकों का प्रशिक्षण, मातृभाषा आधारित शिक्षा की कठिनाइयाँ और संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। इसके बावजूद, यह नीति भारत की भविष्य दृष्टि है, जो 21वीं सदी के तकनीकी दक्ष, नवाचारी, नैतिक और जिम्मेदार नागरिक तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। सफल क्रियान्वयन ही इसे भारत को पुनः शिक्षा के क्षेत्र में विश्वगुरु बनाने में सक्षम बनाएगा।

8. संदर्भ सूची

[1] भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।

[2] राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (2021). *इंटरनेट और डिजिटल एक्सेस पर रिपोर्ट*. नई दिल्ली: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय।

[3] UNESCO (2021). *Education for Sustainable Development Goals: Learning Objectives*. पेरिस: यूनेस्को।

[4] विश्व बैंक (2022). *World Development Report: The Changing Nature of Work*. वॉशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।

[5] QS World University Rankings (2025). *Global Rankings Report*. लंदन: QS Quacquarelli Symonds।

[6] Aithal, P. S. & Aithal, S. (2021). *Implementation Strategies of National Education Policy 2020 of India*. International Journal of Management, Technology, and Social Sciences, 6(2), 282–302.

[7] Tilak, J. B. G. (2021). *Higher Education in India: In Search of Equality, Quality and Quantity*. Springer.

[8] OECD (2022). *Education at a Glance 2022: OECD Indicators*. पेरिस: OECD Publishing।

[9] Singh, R. (2020). "National Education Policy 2020: A Critical Analysis." *Indian Journal of Educational Research*, 39(2), 45–62.

[10] Sharma, N. & Gupta, A. (2023). "Digital Divide and NEP 2020: Challenges in Rural India." *Journal of Educational Technology*, 12(1), 56–70.